किस्सों की गूँज

राधा एम गिरधर

BlueRoseONE.com
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Radhaa M Girdhar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-498-7

Cover Design: Aafiya Saifi
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: January 2026

समर्पण

मेरे जीवन के अनुभवों को, जो मेरी प्रेरणा के स्रोत रहे।

आभार

इस पुस्तक को साकार करने में निरंतर सहयोग और अटूट समर्थन देने के लिए मैं अपने पति और अपनी बेटी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।
साथ ही अपने माता-पिता को भी धन्यवाद, जो आज मेरे साथ नहीं हैं, लेकिन उनका शाश्वत प्रेम सदैव मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा है।

परिचय

अभिव्यक्ति, अनुभव, विश्वास, अविश्वास, प्रेम और कड़वाहट—इन सबकी मिली-जुली कहानी को कविता के रूप में प्रस्तुत करने का एक विनम्र प्रयास किया गया है।

अनुक्रमणिका

1. मौसम 1
2. किस्सा 3
3. उलझन 4
4. नई उड़ान 5
5. तेरा मिलना 6
6. माफ़ी 7
7. वायदे 8
8. तकलीफ़ 9
9. बोझ 10
10. मुस्कान 11
11. इबादत 13
12. सब्र 14
13. कुछ ख़ास 15
14. कलयुग 16
15. ज्ञान 17
16. ख़ुशबू 18
17. भरोसा 19
18. सोचता हूँ 21
19. हल्का-फुल्का किस्सा 22

20. मूड 23
21. अतृप्त..24
22. बीते दिन 25
23. वफा..26

1. मौसम

हमने मौसम बदलते देखे हैं,
दिन–रात भी बनते देखे हैं।

पत्थर भी पिघलते देखे हैं,
पानी में रास्ते देखे हैं।

शाखों पे पतझड़ भी देखे हैं,
फूलों के मंज़र भी देखे हैं।

सूरज–चाँद भी उगते देखे हैं,
काले–घिरते बादल भी देखे हैं।

चाँदनी रात भी उगती देखी है,
स्याह रात भी हमने देखी है।

सर्द हवाएँ भी चलती देखी हैं,
गर्मी के मंज़र भी देखे हैं।

सुलझे–उलझे रिश्ते भी देखे हैं,
ख़ंजर चुभते भी देखे हैं।

साँसों को सिसकते देखा है,
वादों को बिखरते देखा है।

नफ़रत भी उगलती देखी है,
प्रेम के किस्से भी देखे हैं।

छल और कपट भी देखे हैं,
सीधे सच्चे मन भी देखे हैं।

वक़्त बदलते भी देखे हैं,
अपने दुश्मन बनते भी देखे हैं।

रफ़्तार भी हमने देखी है,
संभले–सुलझे भी देखे हैं।

उम्र की गर्दिश भी देखी है,
ढलते सूरज भी देखे हैं।

समुंदर की गहराई भी देखी है,
नदी के भाव भी देखे हैं।

रिश्तों की सच्चाई भी देखी है,
झूठ के पर्दे भी देखे हैं।

रुसवाई के पल भी देखे हैं,
टूटे मन फिर जुड़ते देखे हैं।

2. किस्सा

किया दफ़न दोस्ती को, कहानी तो सुनो,
विश्वास विष बना, बेईमानी तो सुनो।
भावों को तार-तार किया, किस्सा तो सुनो,
रब माना, बेवफ़ा हुआ, मेरी जुबानी तो सुनो।

इक आह रह जाती है, ये बात तो सुनो,
रब जैसी इबादत की, ये राग तो सुनो।
सब स्वर बिगड़े, ये नई तान तो सुनो,
खामोशी का मंज़र था, ये साज तो सुनो।

व्यथा मन की ना जानी, ये आवाज़ तो सुनो,
राग, ताल, साज़ बिखर गए, ये राज़ तो सुनो।
अधूरी है कहानी, अब ये भी अंदाज़ तो सुनो,
मर्म, दवा मुझे ना मिली, ये बात भी तो सुनो।

3. उलझन

उलझन मुमकिन है सुलझ जाए,
तेरी यारी का ग़म भी धुंधल जाए।
वक़्त बीते तो शायद तस्सली आए,
तेरा अस्तित्व अब मुझे छू न पाए।

मेरा रोम–रोम अब मेरा हो जाए,
तेरा जाना नया आगाज़ हो जाए।
हृदय-परिवर्तन मुझमें अब आये
शायद अब हम ख़ुद से मिल पाएँ।

शुक्रिया तेरा हम अदा कर पाएँ,
शायद हम बेहतर इंसां बन जाएँ।
उम्र की सीढ़ी पर नया पड़ाव आए,
मंज़िल नई मिले, लोग नए मिल जाएँ।

भरोसा, वफ़ा, उम्मीद अब न जगाएँ,
अपने–अपने रास्ते हम बढ़ते जाएँ।
क़दम मिलें, पर अब दिल न मिलाएँ,
बस अपनी एक नई पहचान बनाएँ।

4. नई उड़ान

भरो नई उड़ान, सब करो अपना कल्याण,
आदर्शों की बातें छोड़ो, हो जाओ अनजान,
कलयुग की माया है, तुम भी बनो हैवान,
जिसने जो कर्म किया, बदले का दो ज्ञान।

कलयुग की यही है सबसे बड़ी पहचान,
आप बीती बता रही हूँ, कर दिया बखान,
हिम्मत टूट गई, सस्ते में बिकते हैं इंसान,
दोस्ती धर्म नहीं रही, ना ही वेद-पुराण।

मैंने कोशिश की, अब तुम्हारा इम्तिहान,
सीख मिलेगी, तब ही होगा जग में नाम,
अनुभव मिलने पर ही बनता है विद्वान,
सबको मेरा नमन, उन सबको राम-राम।

5. तेरा मिलना

तेरा मिलना कोई बहाना ना था,
क़ुदरत का कुछ नज़राना था,
एहसान तेरा, तू दोस्त बनके आया,
तूने हँसना और रोना भी सिखाया,
पकड़ी उँगली और साथ निभाया,
समय बदला, काला साया आया,
नियत में तेरी अब कुछ खोट आया,
भुला दिए सब मीठे पल, मुझे भरमाया,
मैं तो सीधी चाल चला, बदली तेरी काया,
दिल टूटा, राहें बदली, मन कुछ भर आया,
तेरा कर्मा, तू जाने, सब कुछ ख़ाक मिलाया,
सब कुछ ख़ाक मिलाया।

6. माफ़ी

माफ़ी एक बला है,
अजीब इक सलाह है।

क्यूँ ना बदले हम भी,
तू भी पहले सा ना है।

माना ग़लत हम भी हैं,
तू सही कहाँ है।

अपराध बोध मेरा क्यूँ,
खेद तुझे नहीं तो क्या है।

मेरी अपनी करनी है,
अंधविश्वास की सज़ा है।

टटोलो, परखो, जानो,
इतनी जल्दी क्या है?

पुनर्विचार कर लो,
अब सही क्या है।

चेहरे बदलते देखे,
आईना सही कहाँ है।

7. वायदे

वायदे तारीख़ में बदल गए,
ज़ख़्म नासूर की शक्ल बन गए।
खुशियाँ पा लूँ अब, जब तुम आए,
भूल जाऊँ सब ग़म, जब तुम आए।

जी लूँ हर मौसम, जब तुम आए,
हर तरफ शोर हो, कि तुम आए।
हर पल बेहाल कर रहा है,
दिल में तूफ़ान उठ रहा है।

कुछ अपना हाल सुनाओ,
कुछ मेरा हाल सुनो।
कुछ हम दिल की बोले,
कुछ तुम किस्से बतलाओ।

तुम भी थोड़ी बात किया करो,
दिल को धड़कन दिया करो।
लफ़्ज़ों के जाल बुना करो,
इश्क़ के सौदागर बना करो।

8. तकलीफ़

खुद को आज़माइश में डाला बहुत बार,
तकलीफ़ हुई, चोट पहुँची, हुए बेज़ार।
रफ़्तार न छोड़ी, किए वायदे हज़ार,
सीखा ना तरीका, सीखा ना इनकार।

ज़ख़्म खुद को दिए, मिले धोखे बार-बार,
अपनी बातों का किया कई बार इज़हार।
लोगों ने गहरी ठेस पहुँचाई अनगिनत बार,
रिश्तों में ढील दी तो मिला बस इन्कार।

सब्र का बाँध टूटा, पानी हुआ फुहार,
हम फूटे तो विस्फोट हुआ ज़ोरदार।
आग तो लगनी थी, जब किया इकरार,
सपने टूटे तो निखरा नया किरदार।

अब लगता है हमको, हो गए समझदार,
नई किरण, नया सवेरा है मेरा अधिकार।
छोड़ पुरानी रीत, खुद को किया स्वीकार,
जन्म लिया मैंने खुलकर फिर इक बार।

९. बोझ

जा मुझसे जुदा होकर तो देख,
तेरी क़िस्मत क्या रंग लाती है।
तू सितारा बने या फिर धरती,
तुझे तकदीर धूल में मिलाती है।

ना होने का ग़म तुझे सताएगा,
यादों का बोझ तुझे तड़पाएगा।
मरहम लगाने कोई नहीं आएगा,
तन्हाइयों से रिश्ता रह जाएगा।

क़ीमत हीरे की तुम क्या जानो,
पत्थर तलाशने की आदत होगी।
ऐसे ज़ख़्मों की दवा नहीं होती,
स्याही में रंग की जगह नहीं होती।

भूल जाऊँ तुझे मुमकिन नहीं,
याद रखूँ तुझे, ये भी ज़रूरी नहीं।
सबक़ मिल गया दोस्ती का,
इसमें अब कोई गहराई नहीं।

10. मुस्कान

चलो चाय की चुस्की भरते हैं,
चुनिंदा दोस्तों की बातें करते हैं।
जो रूह का हिस्सा बन जाते हैं,
हर दुख-पीड़ा में संग आते हैं।

भूलकर अपनी, मेरे हो जाते हैं,
कभी पराया भाव नहीं लाते हैं।
वो वृक्ष हैं, जिसकी छाया में,
हर ग़म छोटे हो जाते हैं।

जीवन की कठिन राहों में,
सिर्फ आपके हो जाते हैं।
वो मेरा गर्व, मेरा अभिमान है,
जिसने दिया हर बार ज्ञान है।

दुख के बादल छँट जाते हैं,
रास्ते नए बन जाते हैं।
उनकी वाणी में जादू है,
प्रेम रस बरस जाते हैं।

मेरी सब कमियों में भी,
उसे गुण मिल जाते हैं।
वो प्रेम का गहरा सागर है,
डुबकी में मोती मिल जाते हैं।

और इन चाय की चुस्कियों के बीच,
हर उदासी धीरे-धीरे छँट जाती है,
सिर्फ दोस्ती और मुस्कान बच जाती है।

11. इबादत

दोस्ती रब की इबादत होती है,
दोस्ती में बेपनाह वफ़ा होती है।
वफ़ा जब शक में बदल जाए,
दोस्ती सिर्फ़ फ़ना होती है।

तूने वो ज़ख़्म दे डाला इस बार,
जिसकी भरपाई नहीं होती।
पार की हदें तूने सब इस बार,
ऐसी लापरवाही नहीं होती।

रहिमन, धागा प्रेम का,
मत तोड़ो चटकाए।
टूटे से फिर न जुड़े,
जुड़े घाँट पड़ जाए।

ये वो करीबी एहसास है,
शब्दों में मिटाया नहीं जाता।
रब की जुबान होती है दोस्ती,
शब्दों में उलझाया नहीं जाता।

12. सब्र

मेरी फ़ितरत तो सब्र की है नहीं,
जज़्बातों की कमी तो है नहीं,
आक्रोश नफ़रत सी है कहीं,
दिल पे तेज़ छुरी चली है—सही।

घाव बहुत गहरा ही सही,
मंज़र देखने बचे हैं अभी,
तू रोए और मैं मुस्कुराऊँ,
जवाब अभी बचे हैं कहीं।

मर्यादा बची है ही नहीं,
रुद्र तांडव की ध्वनि,
गूँज रही है हर कहीं,
बादल फटे हों, प्रलय कहीं।

अभी घृणा बैठी है कहीं,
एक शोर है चारों ओर,
माफ़ कर दूँ तुझे गर,
ये भी मेरी ग़ैरत है नहीं।

13. कुछ ख़ास

चलो आज कुछ ख़ास बुनते हैं,
अपनों की वफ़ा को चुनते हैं।
बचपन के ख़ुशनुमा पलों की,
फिर से हम गिनती गिनते हैं।

वो बेबाकी, वो पागलपन,
वो आज़ादी, वो लड़कपन।
वो सादगी, वो सुनहरे पल,
फिर से मन हो जाए चंचल।

वो सादगी, वो भरोसा,
जवानी फिर से ढूँढते हैं।
शायद वो पल खोज पाऊँ,
रूह को फिर गर्मी पहुचाऊँ।

14. कलयुग

कैसा ये कलयुग हुआ भारी है,
रिश्तों में कैसी मारामारी है।
दोस्ती इंसाफ़ माँगती बेचारी है,
बेशर्म होना भी अदाकारी है,
भरोसा नीव है, दोस्त व्यापारी है।

यकीन बन गया अब लाचारी है,
विचारों में उलझी वफ़ादारी है।
क़ैद हूँ सवालों की बारिश जारी है,
पिंजरा तोड़, उन्मुक्त होने की बारी है,
वक्त आ गया बदलने की तैयारी है।

नमन आपको, मेरी तक़दीर सवारी है,
मेरी तकदीर सवारी है....।

15. ज्ञान

ज्ञान मिले जब भी — बटोर लो,
अपनी झोली गुणों से भर लो।
मोह–माया, अवगुण रोक लो,
रब को अपनी ओर मोड़ लो।

विवेक से, सब्र से तुम काम लो,
बुद्धिहीनों को अब पहचान लो।
सितारे हो तुम — ये भी जान लो,
अहंकारी से भी थोड़ा ज्ञान लो।

जो भूल गया, उसे फिर जान लो,
स्वयं से प्रेम की डोरी बाँध लो।
प्रीत करने वालों को पहचान लो,
कश्ती डूबी — अब गहराई माप लो।

16. ख़ुशबू

ख़ुशबू बनके महकेंगे — और महकाएँगे,
परिन्दों की तरह हम भी चहचहायेंगे।

दुख-पीड़ा, चोट — हम सह जाएँगे,
ज़हर का कड़वा घूँट भी पी जाएँगे।

ख़ुद को बुलंदी की हद पे ले जाएँगे,
हवा का रुख़ अपनी ओर मोड़ लाएँगे।

अपनी शोहरत, अपना मुक़ाम पाएँगे,
छोटी चिंगारी से हम शोला बन जाएँगे।

तीर-तरकश भरे बाण — हम भी चलाएँगे,
ऐसा नाता टूटे कि फिर रास्ते ना मिल पाएँगे।

दुआएँ देने से हम भी किनारा कर जाएँगे,
ईश्वर की मर्ज़ी को अपनी ताकत बनाएँगे।

नज़्म
17. भरोसा

क़िस्मत मेरी लाजवाब ही थी,

भरोसा मगर ग़लत हो गया।

रश्क किया जिन पर ता-उम्र,

वही वक़्त पर बेवफ़ा हो गया।

बीत जाती है जवानी समेटते हुए,

आज दिल कुछ खाली-सा हो गया।

लोगों की मजबूरी होगी शायद,

मेरा हमदर्द मुझसे छूट गया।

ख़्वाब बुने थे संग हज़ारों मगर,

मैं कतरा-कतरा बिखर गया।

सींचा था जिसे उम्र भर,

वो खेत अब ख़ाली हो गया।

उम्मीद फीकी-सी पड़ चली है,

एतबार अब डर बन गया।

यक़ीन की ज़मीं छोटी-सी हो गई,

आसमान ही अब मेरा घर हो गया।

नज़्म

18. सोचता हूँ

सोचता हूँ...
सोचता हूँ, कैसे फ़ासले... आ गए हैं।
तेरे–मेरे बीच, अब ज़माने आ गए हैं...
अब तुझे बहाने बनाने आ गए हैं...
हम जैसे दीवाने... कहाँ आ गए हैं।

तुझे शोर–गुल और गाने... आ गए हैं...
हम तन्हाई के किनारे... आ गए हैं।

तंज़ कसना... ताने करना... आ गए हैं...
ख्वाब टूटे... नींद से हम जाग गए हैं।

खामोशी के घेरे में... हम आ गए हैं...
बचने–बचाने के अंदाज़... आ गए हैं।

वार करने के तरीक़े... भी आ गए हैं...
नादानियों से... हम भी आगे आ गए हैं।

ख़ंजर उठाने... अब हमें भी आ गए हैं...
फ़ासले बनाना... अब हमें भी आ गए हैं...।

अब... हमें भी... आ गए हैं...
अब... हमें भी... आ गए हैं...।

19. हल्का-फुल्का किस्सा

पागलपन—हँसी करना भी सही है,
निकम्मों को छोड़ना ही सही है।

अब क्या मेरी जान लेकर रहोगे,
जिन्न-भूत की तरह चिपके रहोगे,
जा! ढूँढ ले घर और कोई नया,
मेरा हिसाब तो निपट सा गया।

तेरे चंगुल का हिस्सा बने और कोई,
मेरी तो तुझसे अब छुट्टी हो गई।
कान पकड़ ली, कर ली मैंने तौबा,
दोबारा दोस्ती का नाच ना होगा।

नाच ना आवे मुझको, आँगन टेढ़ा,
अब छोड़ तो तुम बस मेरा खेड़ा।,
कर लिया इक बार विषपान,
किसी तरह बचाई अपनी जान।

मौक़ा ना दूँगी कोई इस बार,
हो गई मैं भी अब इक चतुर्नार।

20. मूड

अब मूड कुछ हम बदलते हैं,
हल्के-हल्के कुछ आगे चलते हैं।
कब तक सोग बनाए बातों का,
अब थोड़े-बहुत चंगे भी बनते हैं।

तेरा छूट जाना नई तलाश होगी,
नए गीतों–सुरों की शुरुआत होगी।
नई कोपलें फूटेंगी, बरसात होगी,
खेतों में फ़सलें फिर से आबाद होंगी।

सावन आएगा, मन झूमे, दिल गाएगा,
बीती बातों का मौसम भी छँट जाएगा।
मैं झूम उठूँगी, फिर से बचपन आएगा,
मेरा वक़्त सिर्फ़ मेरा ही कहलाएगा।

21. अतृप्त

अतृप्त मन को जो सहला दे—वो सखा है,
कुंठित हृदय की पीड़ा हर ले—वो सखा है,
अंग-अंग को तरंगित कर दे—वो सखा है,
निर्जीव मन को प्रेरित कर दे—वो सखा है।

एकांत को अनुभव कर ले—वो सखा है,
बिन बोले सब पढ़ ले—वो सखा है,
ईश्वरीय स्वरूप की छवि—वो सखा है,
त्याग, प्रेम, की कहानी—वो सखा है।

अश्रु-बूँद जो न बहने दे—वो सखा है,
श्वासों से जो जुड़ जाए—वो सखा है,
आत्मसमर्पण भाव हो जिसमें—वो सखा है,
रोम-रोम को पुलकित कर दे—वो सखा है।

22. बीते दिन

पन्ने पलटे किताब के—
बेहिसाब रंग सामने आए।

कुछ खट्टी–मीठी तस्वीरों के चेहरे—
फिर दिल में उतर आए।

जुनून, जोश, शरारत, मोहब्बत—
वो दिन फिर याद आए।

रिश्ते रेशम से भी महीन होते हैं—
टूटें तो फिर जुड़ न पायें।

बंद कर लो दरवाज़े–खिड़कियाँ—
कहीं यादें दस्तक न दे जाएँ।

फिर मिलूँ शायद—
पर पहले जैसी बात न बन पाए।

पहला, दूजा मौक़ा भी चूक गया तू—
शिद्दत से रिश्ते निभाने नहीं आए।

23. वफा

जिस दिन मेरा दर्द अपनाओगे,
उस दिन हमसफ़र बन जाओगे।
जब मेरी वफ़ा समझ जाओगे,
उस दिन मेरे जैसे बन जाओगे।

इश्क़ में जब भी खो जाओगे,
मुझ जैसे ही बन जाओगे।
और ख़ुद से भी मिल पाओगे,
शायद इश्क़ भी समझ जाओगे।

फिर ग़ैरों को भी अपनाओगे,
जब दिल कहीं दे आओगे।
तब आशिक़ भी बन जाओगे,
और सच्चे वादे निभा पाओगे,
सच्चे वादे निभा पाओगे।